

પ્રવચન નં. ૯૪ ગાથા - ૩૨-૩૩ ભાદરવા વદ-૧૨ ગુરુવાર તા. ૨૮-૯-૭૮ સં. ૨૫૦૪

ગાથાનો ભાવાર્થ છે. કયા કહા ઉસમેં વો કહતે હૈ. પ્રથમ તો અપના શુદ્ધ સ્વરૂપ પરદ્રવ્યસે ભિન્ન રાગસે ભિન્ન પર્યાયસે ભી ભિન્ન, ઐસા આત્માકા અનુભવ હો ઉસકા નામ જિતેન્દ્રિય જિન કહનેમેં આયા હૈ. જે ક્ષયોપશમ જ્ઞાનકી પર્યાય હૈ, રાગ હૈ કે નિમિત્ત હૈ એ સબ પરદ્રવ્ય ગિનનેમેં આયા હૈ પરજ્ઞેય, જ્ઞાયક સ્વભાવ સ્વજ્ઞેય, એ સ્વજ્ઞેયકા લક્ષ કરકે આશ્રય કરકે પરસે અપની ચીજકો જુદી જાનના, પરિપૂર્ણ જાનના, અધિક જાનના ઉસકા નામ સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાનચારિત્ર હૈ. આ પહેલા દરજ્જાકી સ્તુતિ હૈ. આવું છે. બીજા દરજ્જાની આ (ગાથા) ૩૨ મેં.

ભાવાર્થ:- “ભાવક મોહ કે અનુસાર” કયા કહેતે હૈ? જ્ઞાનીકો ભી સમકિતીકો ભી મુનિકો ભી આત્મજ્ઞાન ઉપરાંત ચારિત્રદશા હુઈ હૈ, ઉસકો ભી હજી ભાવક જો કર્મ જડ ઉસકે અનુસારે હોનેવાલા વિકારી રાગદ્વેષ આદિ ભાવ એ ભાવ્ય હૈ. ભાવક મોહકે અનુસાર. હૈ? સ્વભાવકે અનુસાર નહીં, કર્મકા નિમિત્ત જો ઉદયમેં આયા એ સ્વભાવ તરફકા ઈતના આશ્રય નહીં અને પરકા આશ્રય કરતે હૈ, તો ઉસમેં રાગદ્વેષ વિકારી પર્યાય સમકિતીકો ભી જ્ઞાનીકો ભી ઉત્પન્ન હોતી હૈ. આહાહાહા! ઉસકો જીતના અર્થાત્ “પ્રવૃત્તિ કરનેસે અપના આત્મા ભાવ્યરૂપ હોતા હૈ” આહાહા! ઝીણી વાતું બહુ “ઉસે ભેદજ્ઞાનકે બલસે” અર્થાત્ નિમિત્તકે અનુસારે જો પ્રવૃત્તિ થઈ એ અનુસાર છોડકર, સ્વભાવકે અનુસારે વિશેષ ઉગ્ર આશ્રય લિયા, આહાહા... ભિન્ન અનુભવ કરનેવાલા જિતમોહ જિન હૈ. જિતમોહ ક્ષીણમોહ નહીં, ક્ષીણમોહનો પાઠ હૈ ને પાઠ હૈ તેત્રીસમો. “જિતમોહસ્સ દુ જઈઆ ખીણો મોહો” એટલે કોઈ કહે આ જિતમોહનો અર્થ કયા? તો અહીંયા તેત્રીસમાં લિયા ક્ષીણમોહ, પહેલે જો રાગકા વિકારકા સ્વભાવકો અનુસરકે ઉપશાંત કરતે થે ઉસકો જિતમોહ કહનેમેં આયા, ઉપશમ શ્રેણી હોં આઠમે ગુણસ્થાને, આહાહા... સાતમા તક અબુદ્ધિપૂર્વક કર્મકા ભાવકકે અનુસાર રાગાદિ હોતા થા. સમજમેં આયા? એ કર્મકા ભાવકકે અનુસાર જો રાગદ્વેષ પુણ્ય પાપ આદિ વિકલ્પ, મોહ ભાવ, એ પાપ ભાવ હૈ. ઉસકો જો નિમિત્તકે અનુસારે ભાવ્ય થા એ ન હોને દેના. આહાહા... અને જ્ઞાયક સ્વરૂપ ભગવાનકા ઉગ્ર આશ્રય લેકર એ વિકારકો દબાના, ઉપશમ કરના એ બીજા પ્રકારકી સ્તુતિ ઊંચા પ્રકારકી સ્તુતિ, આહાહા... આવી વાતું હવે આમાં ક્યાં માણસને (ખ્યાલ આવે) બાપુ મારગડા ઐસા હૈ.

એ ભાવક મોહકે અનુસાર મુનિકો ભી સત્તમ્ગુણસ્થાનમેં મોહકર્મકા નિમિત્તકે અનુસાર અબુદ્ધિપૂર્વક રાગ જો થા અંદર વિકાર, ઉસકો સ્વભાવકા અનુસાર કરકે, એ વિકારકો દાબકે ઉપશમ કરના, ઉપશમ શ્રેણી, શ્રેણીની અપેક્ષાએ ઉપશમ, એ લેગા ભાવાર્થમેં ઉપશમ આદિ કરકે, શબ્દ હૈ જરા સૂક્ષ્મ પીછે અર્થ કરેગા.

“આત્મા ભાવ્યરૂપ હોતા હૈ ઉસે ભેદજ્ઞાનકે બલસે ભિન્ન અનુભવ કરનેવાલા જિતમોહ જિન હૈ.” આહાહા! એ તો અત્યારે (આ ક્ષેત્રે) હો સકતે નહીં મગર વસ્તુ સ્થિતિ બતાતે હૈ. સમજમેં આયા?

यहां ऐसा आशय है के श्रेष्ठी यऽते हुऽमे देऽपो आठमे आहाहाहा... जिसे मोहका उदय अनुभवमें न रहे, आहाहा... आ वस्तुका ज्याल तो अे करे के उपशम श्रेष्ठी आठमें गुणस्थाने यलती है त्यां मोहका उदय अनुभवमें न रहे, आहाहा... भगवान आनंदका नाथ अंतरमें जुक जाये विशेष, सम्यग्दर्शन ज्ञान-यारित्र तो है, पण मोहके अनुसार जो रागादि था सातमे गुणस्थान तक, आहाहा... छहे गुणस्थाने तो बुद्धिपूर्वक राग था, अबुद्धिपूर्वक हो डी था. सातमे बुद्धिपूर्वक राग नहीं था, पण भावक कर्मके अनुसार रागद्वेष ऐसा परिणाम, भाव्य होता था. आहाहा ! सातमें अे अंतरमें सीधा स्वभावके अनुसर करके जे राग आत्मामें था पर्यायमें, उसको दबा देना उपशम करना अे बीजा प्रकारकी पहेलासे ांयी स्तुति है. समजमें आया ?

यहां ऐसा है के श्रेष्ठी यऽते मोहका अे अनुभवमें न रहे. आहाहा... और अपने बणसे, अपने बणसे स्वभावके अनुसारमें पुरुषार्थ करनेसे, आहाहा... उपशम आदि करके, श्रेष्ठी तो उपशम है, पण रागका क्षयोपशम त्यां होता है थोडा अथवा ज्ञानावरणीका भी क्षयोपशम होता है. समजमें आया ? आहाहा ! उपशम आदि शब्द पडा है ने ? है, रागका उपशम करते है अने दूसरा जो ज्ञानावरणी आदि है उसका विशेष क्षयोपशम होता है. अे उपशम आदि करके, है तो उपशम श्रेष्ठी, पण उपशम आदि करके, आहाहा... ज्ञानावरणी आदिका उदय है, तो उसके अनुसार जरी-ज्ञानकी डीणी दशा होती थी. आहाहाहा ! अे स्वभावके अनुसारे ज्ञानका क्षयोपशम हुआ त्यां ज्ञानका उपशम नहीं होता, उपशम तो मोहका होता है, जीणी वात भाँ बहू आ तो. आहाहा !

अे अपना स्वभावका भान है अनुभव हुआ, सम्यग्ज्ञान हुआ, सम्यग्दर्शन हुआ, और स्वरूपका यारित्र आयरण भी थोडा हुआ, पूर्ण आयरण हो तो तो यथाभ्यात यारित्र हो जाय, तो भावकके अनुसार भाव्य करनेका रहेते नहीं. समजमें आया ? थोडो थोडो अभ्यास पहेलां होना याहीये. आ तो कोलेज है वीतराग भगवानकी कोलेज है. आहा ! भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंदका नाथ सख्यिदानंद प्रभु, उसको पर्यायका प्रेमसे हठकर रागका प्रेमसे हठकर, निमित्तका प्रेमसे हठकर अपना ज्ञायकमें प्रेम लगा दिया अेकाग्रता करके, प्रेमका अर्थ अेकाग्रता, उसका नाम प्रथम जितेन्द्रिय स्तुति पहेला प्रकारनी पहेला नंबरनी नहीं, पहेला प्रकारनी (स्तुति) कहनेमें आता है.

हवे दूसरा प्रकारकी ांयी स्तुति दूसरा प्रकार है, पण पहेला नंबरसे ांयी है. आहाहा ! ज्ञानीको भी सप्तम् गुणस्थान तक भावक मोहकर्मके अनुसार समझिती है, अप्रमत्तदशामें भी राग अबुद्धिपूर्वक होता है भाव्य. आहाहा ! आवी वातुं है. उसको परके अनुसारका जो भाव है पुरुषार्थ छोडकर अंतरमें लगाना तो अे रागद्वेष पुन्यपापका भाव अे विकल्प है वो दबा देता है, दबा देता है, और उपशमभाव प्रगट होता है, अने ज्ञानावरणी दर्शनावरणी आदिका अंतराय आदिका क्षयोपशम भाव होता है. समजमें आया ? श्रेष्ठी उपशम है, पण उपशम तो मोहका अेकीलाका होता है. तो साथमें शुद्धता बढती है ज्ञानकी, आनंदकी, वीर्यकी अे बधी शुद्धता बढती है. समजमें आया ? अे उपशम श्रेष्ठीमें अे क्षयोपशमभाव है, आवी क्यां वात

हवे उदय ने उपशम ने क्षयोपशम.

भगवान परम पारिष्णामिक स्वभाव प्रभु परमस्वभावभाव उसका आश्रय लेकर जो सम्यग्दर्शन ज्ञान यारित्र उत्पन्न हुआ अे पहेली स्तुति है. पीछे अस्थिरतामें पर्याय अबुद्धिपूर्वक थी, छहे तक बुद्धिपूर्वक राग था, बुद्धिपूर्वक अने अबुद्धिपूर्वक हो डी. समजमें आया ? ये देवकीनंदन अेक पंडित था अडा छन्दोरवाणा अे आये थे, उसने पंचाध्यायीना अर्थ उसने किया था के छहे गुणस्थाने बुद्धिपूर्वक राग है अने सातमें गुणस्थाने अबुद्धिपूर्वक है. तो उसको कडा, (अे बात डीक नहीं) अे तो कहे अमे तो पंडित है अैसा है नहीं, माणस सरण था पंडित था. देवकीनंदन, सुधरावो पंचाध्यायीका अर्थ के छहे गुणस्थाने पण ज्यालमें आनेवाला अे बुद्धिपूर्वक राग है, अने वो डी समय ज्यालमें आता नहीं अे अबुद्धिपूर्वक है. आवी वातुं हवे... अने ससम गुणस्थानमें बुद्धिपूर्वक ज्यालमें आते है अैसी बात नहीं है पण अबुद्धिपूर्वक है, कारण उपयोग त्यां लागु नहीं होता पण होता है राग, अे रागको भावकके अनुसार होता था अे अपना भगवान तरङ्गका अनुसार होकर अे स्तुति हुई. आडाडा ! अरे आवी वातुं हवे. अे रागको उपशम करना और दूसरी पर्यायको क्षयोपशमकी वृद्धि करना. (श्रोता:- अेकला मोहमां ज अे क्षयोपशमनुं उपशमनुं कार्य होय छे ?) मोहनो उपशम क्षयोपशम होय छे, पण मोहनो उपशम लेवो छे अडी उपशम श्रेणी लेवी छे ने है तो क्षयोपशम दशमा गुणस्थान तक पण अडी दबाव्युं छे अेटले उपशम श्रेणी लेना है, क्षयोपशम तो है. पण (श्रोता:- अेकला मोहनो ज उपशम केम बीजा कर्मनो केम नहीं) अंदर बीजा कर्मनो उपशम होता नहीं. बिलकुल उपशम नहीं, उपशम अेक मोहका-

क्षायिक आठका, उपशम अेकका, उदय आठका, क्षयोपशम यारका, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी मोहनीय अने अंतराय. ज्रीणी वात भाछ ! आठ कर्म है तो उदय आठका, हवे उपशम अेकका मोहका, क्षयोपशम यारका, ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहनीय ने अंतराय. उपशम श्रेणीमें मोहका उपशम है, अे दबाना अपेक्षाअे, बाकी है क्षयोपशम (श्रोता:- ज्ञाननो क्षयोपशम) अनोय क्षयोपशम है दशमा गुणस्थान सुधी उदय है ने, छतना क्षयोपशम है पण अडीया आ अपेक्षा लेना है. आवी वातुं हवे. मोहका भी क्षयोपशम होता है, मोहका उपशम होता है, अने मोहका क्षय होता है. ज्ञानावरणीका उदय होता है, क्षयोपशम होता है, क्षायिक होता है, उपशम नहीं. दर्शनावरणीयका उदय होता है क्षयोपशम होता है क्षायिक होता है, उपशम नहीं, अंतरायका उदय होता है क्षयोपशम होता है क्षायिक होता है, उपशम नहीं. आवी वातुं हवे क्यां ? आडाडा ! अडी तो समय-समयना हिसाब है. आडाडा !

जबलग उपशम श्रेणी तक न आवे तबलग समकित्ती मुनिको ससम गुणस्थान तक, आडाडाडा... भावक कर्मके अनुसार जरी राग अबुद्धिपूर्वक है, आडा... उसको आगण पुरुषार्थको बढाकरके स्वभावका विशेष अनुसारण करके अे भावकके अनुसार राग था उसको दबा दिया, उपशम कर दिया. अैसे राग द्वेष आदि विशेष लेना, वो सोण भोल है ना. अमृतयंद्रायार्ये सोण भोल. पांच छन्द्रियां अैसा लिया है, और अन्य विचार लेना अैसा लिया है- जयसेन आचार्यकी टीकामें अैसा भोल लेकर अन्य असंभ्य विभावका व्याख्यान कर लेना. (अैसा

लिया है) आहाहाहा ! आवी वातुं छे. विकल्पका अनेक प्रकार है. अनेक प्रकार मांयला असंप्य प्रकारका विभाव है. आहाहा ! तो जे ज्वको जे प्रकारका विकल्प है उसको स्वभावके अनुसार दाब देना. आहाहा ! उपशम आदि करके, शब्दमां उपशम आदि करके, अेकलो उपशम करके न लिया, श्रेणी उपशम है पण क्षयोपशम है साथमें. आहाहा ! अरे प्रभु तुं कोण है क्यां है ? तेरी दशामें क्या होता है ? आहाहा ! आत्मानुभव करता है उसे जितमोह कहा है, तो यहां मोहको जिता है नाश नहीं किया, क्षय नहीं किया दबा दिया. ऐसी अेक स्तुतिका प्रकार लिया तो सबको उपशम श्रेणी आती है ऐसा कंछ है नहीं. क्या कहा ? के आत्माका अनुभव हुआ अने आगण बढकर सबको उपशम श्रेणी ही होती हैं. ऐसा है नहीं, पण उपशम श्रेणी होती है उसको दूसरा प्रकारकी स्तुति गिननेमें आया है छतना... क्या कहा ? कोछ तो आत्माका अनुभव करके आठमें गुणस्थानसे क्षपकश्रेणी चढते है, रागका नाश करके स्वभावका अनुभव करते है अंदर चले जाते है.

तो उपशम सबको होता है ऐसा नहीं. पण यहां तो स्तुतिका प्रकारना वर्णन करना है तो त्रण प्रकारकी स्तुतिमें दूसरी स्तुतिमें रागको उपशम करना ऐसी अेक स्तुति लिया, पण सबको होता ही है ऐसा ऐसे नहीं. आहाहाहा ! (श्रोता:- सम्यग्दर्शनमां प्रथम उपशम थाय ज, अेवो यारित्रमां नियम नहीं.) अे प्रश्न अत्यारे अहीं नथी. अहीं तो श्रेणीनी वात छे- क्यां उपशम थाय अे वात नथी. अहीं तो श्रेणीनी वात छे. समकितनो उपशम थाय पहेलो अे अहींया प्रश्न नथी, अे तो पहेला उपशम हो गया, उपशममांथी क्षयोपशम थछने क्षायिक हुआ अेनी कंछ बात नहीं अहींया. अहीं तो यारित्र मोहका जे उपशम है उसकी बात है, मोह शब्द लिया है. अे यारित्रमोह, मोह शब्द तो है पाठमें अे यारित्रमोहका मोह है, दर्शनका मोह तो है नहीं, अे तो पहेली श्रेणीमां नाश कर दिया हे. आहाहाहा ! अरे आवा बधा जणपण राभवा. (श्रोता:- पहेले जणपण तो होना याहीये ने ?) आ यीज अंदरनी वात. थोडा वभत लेना पडे प्रभु, तेरी यीजमें क्या है अने कैसा दर्शन होता है, अने कैसा उपशम यारित्र होता है और कैसे क्षपक यारित्र होता है अे कैसी पद्धति है यह जानना याहीअे. आहाहाहा ! भीमचंद्रभाछ नथी आव्या ? (श्रोता:- बपोरे आवशे) हीक बपोरे आवशे.

अहीं अपने बणसे शब्द पडा है, अे कर्मका उदय घट जाअे माटे पुरुषार्थ होगा ऐसा नहीं. क्योंकि आत्मामें अेक अभाव नामका गुण है, सुउतालीस गुण है ने ? अेमां अभाव नामनो अेक गुण है, अे कर्मका अभाव हो तो अभाव गुण है ऐसा नहीं. अपना स्वभाव ही ऐसा है के परका अभावसे परिणमना ऐसा अभाव गुण है. आहाहाहा ! समजमें आया ? भाछ आ तो सर्वज्ञ वीतराग अेनी शैली है बधी आ तो. आहाहाहा ! अपने बणसे उपशम आदि करके अे कहेनेमें अे आशय है के कर्मका उदय त्यां मंद हो गया, माटे अहींया आत्मा तरङ्ग जुका ऐसा है नहीं. आत्मा तरङ्ग जुकनेका बणसे जूक्या है. आहाहाहा ! अपने बणसे उपशम आदि करके आत्म अनुभव करना, आत्मा अनुभव करता है उसे जितमोह कहा जाता है. यहां मोहको जता है, नाश नहीं हुआ.

तो कोछ ऐसे कहे के उपशमादि निकाला कहांसे के क्षीणमोह कइते है ने तेनीसमें तो अे

જિતમોહ હૈ, તો જિતમોહ નામ મોહકા નાશ હો ગયા હો તો ક્ષીણમોહ કૈસે લિયા તો ન્યાં જિતમોહકા અર્થ મોહકો દબા દિયા હે. સમજમેં આયા ? અરે આવી વાતું છે. યહાં તો સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાન ચારિત્ર સ્વભાવકે આશ્રયે હુઆ તો ઉસકો રાગ હોતા હી નહીં એસા નહીં. રાગ કહો કે દુઃખ કહો કે આકુળતા કહો, આહાહાહા ! સત્તમ ગુણસ્થાનમેં ભી અબુદ્ધિપૂર્વક આકુળતા હૈ, રાગ હૈ ને ? આહાહાહા ! ઔર છકે ગુણસ્થાનમેં આત્મજ્ઞાન ઉપરાંત સ્વરૂપની રમણતામાં જમ ગયા હો, ઉસકો ભી રાગકા વ્યક્ત અવ્યક્ત બે પ્રકારકા હૈ ગોમ્મટસારમેં યહ શબ્દ હૈ, વ્યક્ત, અવ્યક્ત છકે ગુણસ્થાને જિતના ખ્યાલમેં રાગ આતા હૈ એ વ્યક્ત ઉસમેં ઉપયોગ સ્થૂળ હૈ તો ખ્યાલમેં ન આવે એ રાગકો અવ્યક્ત કહતે હૈ. સમજમેં આયા ? તો વ્યક્ત અવ્યક્ત રાગ દો પ્રકારકા છકે ગુણસ્થાને ભી હોતા હૈ. સાતમેં બુદ્ધિપૂર્વક રાગ નહીં, અબુદ્ધિપૂર્વક. આહાહાહા ! એ પણ ઈતના દુઃખ હૈ. સમજમેં આયા ? ઈતના રાગ, આગદાહ દહૈ સદા. એ રાગ પણ આકુળતા કષાય હૈ. અગ્નિ હૈ. આહાહાહા ! શાંત શાંત પ્રભુ આનંદકા નાથ ઉસમેં રાગ હોતા હૈ યે દુઃખ અશાંતિ આકુળતા હૈ. આહાહા !

મોક્ષ અધિકારમેં તો એસા કહા, સમયસાર નાટક છકે ગુણસ્થાને આત્મજ્ઞાન ઉપરાંત આનંદકી ધારા ચારિત્રકી વહેતી રહે, ઉસકો ભી જો વિકલ્પ ઉઠતે હૈ પંચ મહાવ્રતાદિકા એ જગપંથ હૈ. રાગ ઉદયભાવ હૈ વો જગપંથ હૈ સંસાર હૈ, આહાહાહા ! સમયસાર નાટકમેં હૈ ને બતાયા થા સમયસાર મોક્ષ અધિકાર ચાલીસમો બોલ હૈ, આહાહાહા ! મોક્ષ-ચોત્રીસ આવ્યું સામે આ ચાલીસ “તા કારણ જગપંથ એવ, ઉત્ શિવ મારગ જો” આહાહાહા ! આત્મજ્ઞાની અનુભવી ક્ષાયિક સમકિતી હો અને મુનિદશા ભાવલિંગ અંદર પ્રગટ હુઆ ઉસકો ભી જો પંચમહાવ્રતાદિ, શ્રવણકા કહેનેકા વિકલ્પ ઉઠતે હૈ એ જગપંથ હૈ. આહાહાહા ! એ સંસારમાર્ગ ઈતના હૈ ! ચાલીસમો બોલ હૈ મોક્ષઅધિકાર “તા કારન જગપંથ એવ અને ઉત્ શિવમારગ જો” અને સ્વભાવ સન્મુખમેં જિતની સ્થિરતા હો ગઈ, એ શિવમારગ અપ્રમત દશા હૈ. એ શિવમારગ હૈ. આહાહાહા ! પરમાદિ જગકો ધુકે-છકે ગુણસ્થાને મુનિ તીર્થંકર હો, છન્નસ્થ ઉસકો જે વિકલ્પ આતા હૈ યે પ્રમાદી જગત તરફ ઢુકતે હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? આવો મારગ છે બાપા. “અપ્રમાદી શિવ ઔર” સ્વરૂપમેં અપ્રમાદ હોકર સ્થિર હો જાતા હૈ યે શિવમારગમેં હૈ. અને જબલબ પ્રમાદકા વિકલ્પ હૈ મુનિકો હો, આહાહાહા ! તીર્થંકર છન્નસ્થ હૈ તબલગ, આહાહાહા ! છકે સાતમેં ઝૂલતે હો પ્રભુ અને છકે વિકલ્પ આતા હૈ પ્રમાદ હૈ. આહાહાહા ! દોષ હૈ, દુઃખ હૈ, આકુળતા હૈ. આહાહાહા !

છકે વ્યક્ત અવ્યક્ત આકુળતા હૈ, સાતમેં અવ્યક્ત આકુળતા હૈ ખ્યાલમેં નહીં આતી હૈ પણ અબુદ્ધિપૂર્વક આકુળતા હૈ અંદર. આહાહા ! ઉસકો મોહકર્મકા ભાવકર્મ ત્યાં અનુસરણ કરના થા જે અંદર સત્તમેં ભી. આહાહા ! એ આગળ બઢકર પુરુષાર્થકા અંદર બળ કરકે એ રાગકા ભાવ જો ઉત્પન્ન હોતા થા, એ દબા દેગા. આહાહાહા ! આવો માર્ગ છે. માલચંદજી ! પરિચય વિના સમજાય એવું નથી. બાપુ ! આહાહાહા ! એવો મારગ છે બાપા શું કહીએ ? આહાહાહા ! અરે ! આ બત્રીસ ગાથા હુઈ.

ગાથા - ૩૩

અથ ભાવ્યભાવકભાવાભાવેન-

જિદમોહસ્સ દુ જહયા ળીણો મોહો હવેજ્જ સાહુસ્સ ।
તહયા હુ ળીણમોહો મળ્ણદિ સો ણિચ્છયવિદૂહિં ॥૩૩॥

જિતમોહસ્ય તુ યદા ક્ષીણો મોહો મવેત્સાધોઃ ।
તદા ળલુ ક્ષીણમોહો મળ્યતે સ નિશ્ચયવિદ્ધિઃ ॥૩૩॥

ઇહ ળલુ પૂર્વપ્રક્રાન્તેન વિધાનેનાત્મનો મોહં ન્યક્કૃત્ય યથોદિતજ્ઞાનસ્વભાવા-
તિરિક્તાત્મસચ્ચેતનેન જિતમોહસ્ય સતો યદા સ્વભાવભાવભાવનાસૌષ્ઠવાવષ્ટમ્ભાત્ત્સન્તાનાત્યન્ત-
વિનાશેન પુનરપ્રાદુર્ભાવાય ભાવકઃ ક્ષીણો મોહઃ સ્યાત્તદા સ ંવ ભાવ્યભાવકભાવાભાવેનૈકત્વે
ટક્કોત્કીર્ણ પરમાત્માનમવાસઃ ક્ષીણમોહો જિન ઙ્હિતિ તૃતીયા નિશ્ચયસ્તુતિઃ ।

ંવમેવ ચ મોહપદપરિવર્તનેન રાગદ્વેષક્રોધમાનમાયાલોભકર્મનોકર્મમનોવચનકાય-
શ્રોત્રચક્ષુર્ગ્નાનરસનસ્પર્શનસૂત્રાણિ ષોડશ વ્યાચ્ચેયાનિ । અનયા દિશાન્યાન્યપ્યૂહ્યાનિ ।

હવે, ભાવ્યભાવક ભાવના અભાવથી નિશ્ચયસ્તુતિ કહે છે:-

જિતમોહ સાધુતણો વળી ક્ષય મોહ જ્યારે થાય છે,
નિશ્ચયવિદો થકી તેહને ક્ષીણમોહ નામ કથાય છે. ૩૩.

ગાથાર્થઃ- [જિતમોહસ્ય તુ સાધોઃ] જેણે મોહને જીત્યો છે એવા સાધુને [યદા]
જ્યારે [ક્ષીણઃ મોહઃ] મોહ ક્ષીણ થઈ સત્તામાંથી નાશ [મવેત્] થાય [તદા] ત્યારે
[નિશ્ચયવિદ્ધિઃ] નિશ્ચયના જાણનારા [ળલુ] નિશ્ચયથી [સઃ] તે સાધુને [ક્ષીણમોહઃ]
'ક્ષીણમોહ' એવા નામથી [મળ્યતે] કહે છે.

ટીકાઃ- આ નિશ્ચયસ્તુતિમાં પૂર્વોક્ત વિધાનથી આત્મામાંથી મોહનો તિરસ્કાર કરી,
જેવો (પૂર્વે) કહ્યો તેવા જ્ઞાનસ્વભાવ વડે અન્યદ્રવ્યથી અધિક આત્માનો અનુભવ કરવાથી
જે જિતમોહ થયો, તેને જ્યારે પોતાના સ્વભાવભાવની ભાવનાનું સારી રીતે અવલંબન
કરવાથી મોહની સંતતિનો અત્યંત વિનાશ એવો થાય કે ફરી તેનો ઉદય ન થાય-એમ
ભાવકરૂપ મોહ ક્ષીણ થાય, ત્યારે (ભાવક મોહનો ક્ષય થવાથી આત્માના વિભાવરૂપ
ભાવ્યભાવનો પણ અભાવ થાય છે અને એ રીતે) ભાવ્યભાવક ભાવનો અભાવ થવાને
લીધે એકપણું થવાથી ટંકોત્કીર્ણ (નિશ્ચલ) પરમાત્માને પ્રાપ્ત થયેલો તે 'ક્ષીણમોહ જિન'
કહેવાય છે. આ ત્રીજી નિશ્ચયસ્તુતિ છે.

અહીં પણ પૂર્વે કહ્યું હતું તેમ 'મોહ' પદને બદલી રાગ, દ્વેષ, ક્રોધ, માન, માયા,

લોભ, કર્મ, નોકર્મ, મન, વચન, કાય, શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસન, સ્પર્શન-એ પદો મૂકી સોળ સૂત્રો (ભણવાં અને) વ્યાખ્યાન કરવાં અને આ પ્રકારના ઉપદેશથી બીજાં પણ વિચારવાં.

ભાવાર્થ:-સાધુ પહેલાં પોતાના બળથી ઉપશમ ભાવ વડે મોહને જીતી, પછી જ્યારે પોતાના મહા સામર્થ્યથી મોહનો સત્તામાંથી નાશ કરી જ્ઞાનસ્વરૂપ પરમાત્માને પ્રાપ્ત થાય ત્યારે તે ક્ષીણમોહ જિન કહેવાય છે.



પ્રવચન નં. ૯૪ ગાથા - ૩૩

તેત્રીસ આ ત્રીજા પ્રકારકી સ્તુતિ, નંબર ત્રીજો પણ ઊંચી સ્તુતિ. આહાહા ! કલ તો બોલ આ ગયા થા સબ. હવે ભાવ્યભાવક ભાવકે અભાવ(સે નિશ્ચયનયસ્તુતિ કહેતે હૈ) ચાર શબ્દ હૈ, (આયા) દેખો ભાવ્ય, ભાવક, ભાવકે અભાવ. કયા કહતે હૈ ? આ તો ધ્યાન રાખીને સમજે તો સમજાય એવું છે. આ કાંઈ કથા વાર્તા નથી આ તો પ્રભુની ભાગવત કથા હૈ. આહાહા ! નિયમસારમાં આવે છે ને ભાઈ છેલ્લે આવે છે નિયમસાર ભાગવત કથા. ભાગવત કથા લોકો કહે એ નહીં. આહાહા !

આ તો ભગવાન પૂર્ણાનંદના નાથની કથા છે. કહતે હૈ ભાવ્યભાવક, એ ભાવક જે કર્મકા ઉદય સસમેં હૈ, ઉસકો ભાવકકા ભાવ્ય, જો અંદર રાગ થા એ ભાવ્ય, ભાવક કર્મકા ભાવ્ય એ ભાવ. ચાર બોલનો અર્થ. સસમગુણસ્થાનમેં પણ જો મોહકર્મ ભાવક થા ઉસકે અંદર અબુદ્ધિપૂર્વક ભાવ્ય નામ રાગ થા. એ ભાવકકા ભાવ્ય વો ભાવ. સમજમેં આયા ? ભાવ્યભાવક ભાવ અભાવ, (ગાથા) બત્રીસમેં અભાવ નહીં થા, સંબંધકા નાશ ઉપશમ કરકે, આ તો અભાવ કર દિયા. બત્રીસમેં તો ઉપશમ દબા દિયા થા. આંહી તો ભાવ્યભાવક, અંદર સસમગુણસ્થાનમેં ભી ભાવક કર્મકે ઉસસે અનુસાર ભાવ્ય નામ રાગ થા, એ ભાવ્યભાવક ભાવ ઉસકા અભાવ. આહાહા ! આ ક્ષીણમોહની હવે સ્તુતિ છે. આહાહા ! છે હજી સ્તુતિ, કેવળ થયું નથી હજી, કેવળ તો ઉસકા ફળ હૈ. ત્યાં પછી સ્તુતિ નહીં. સમજમેં આયા ? ભગવાન આનંદકા નાથ, એ તરફકી દૈષ્ટિ અનુભવ તો હૈ, પણ અસ્થિરતામેં ભાવક કર્મને અનુસારે જે ભાવ્ય થા, એ ભાવક ભાવ્યકા ભાવ ઉસકો સ્વભાવકા ઉગ્ર પુરુષાર્થ કરકે અંદર ઉગ્ર આલંબનસે અભાવ કર દેના, ઉસકા નામ ત્રીજી સ્તુતિ હૈ. આમાં તો શબ્દો યાદ રહે નહીં ત્યાં શું કહેતા 'તા, પણ કહેતા 'તા ભાવ્ય અને ભાવક ને, ઘરે બૈરા પૂછે શું તમે સાંભળીને આવ્યા છો, પણ ભાઈ કંઈક કહેતા 'તા ભાવ્ય અને ભાવક એવું કંઈક કહેતા 'તા ભાવ્ય ભાવક ભાવનો અભાવ. આહાહા ! ભાઈ આ તો ભગવાનની અમૃતધારા, આહાહા... આહાહા... ભાવ્ય (અર્થાત્) સસમગુણસ્થાનમેં હોનેવાલી વિકારી દશા, ભાવક કર્મકા નિમિત્તકા ઉસકે આશ્રયસે ઈતના આશ્રય યહાં નહીં, ઈતના આશ્રય ન્યાં હૈ, એસા જો ભાવ ઉસકા અભાવ, પહેલેમેં એ થા. ભાવ્યભાવક સંકરદોષ થા. ભાવ્યભાવક ભાવકા અભાવ નહીં થા, સંબંધકા ઉપશમ ભાવ કર દિયા થા, અહીં તો અભાવ કર દિયા. આહાહાહા !

जिदमोहस्स दु जइया खीणो मोहो हवेज्ज साहुस्स ।
 तइया हु खीणमोहो भण्णदि सो णिच्छयविदूहिं ।।३३।।
 जितमोह साधुतणो वणी क्षय मोह ज्यारे थाय छे,
 निश्चयविदो थकी तेहने क्षीणमोह नाम कथाय छे. ३३.

गाथार्थ:- जिसने मोहको जित लिया है. उपशम जैसे साधुके देणो, जब मोह क्षीण होकर सत्तामेंसे नष्ट हो जाय, आहाहाहा... पहलेमें तो उपशम कर दिया था, (अटले) पाणीमां मेल है उसको दबा दिया, यहां तो मेलका नाश कर दिया. भगवान आत्मा अपना उग्र आश्रय लेकर, आहाहा... सम्यग्दर्शन ज्ञानमें उसका आश्रय द्रव्यका तो है પણ विशेष आश्रय लेकर, आहाहा ! मोह क्षीण होकर सत्तामेंसे नष्ट हो, तब निश्चयके जाननेवाला संतो मुनिओ निश्चयना ज्ञानवावाला मुनिओ अे निश्चयसे वो साधुको क्षीणमोह नामसे कहते है. निश्चयना ज्ञाननारा संतो अे रागका भावकभाव्य जो भाव था वो स्वभावके अनुसारे उग्र पुरुषार्थ करके नाश कर दिया, इसको क्षीणमोह कहनेमें आता है, अे जवको क्षीणमोह कहनेमें आता है. आहाहा ! आवी वातुं हवे आमां, ओलो तो के दया पाणो, अेकेन्द्रिय (नी दया) करो आ करो आ करो ल्यो. व्रत पाणोने अपवास करो शुं हतुं अेमां ? सांभणने ? आहाहा... अे तो राग है. अर्हिया तो राग समकित्तिको मुनिको जो होता है, आहाहा... एतनी स्तुति कम है जब राग होता है तबतक. तो अे रागको स्वभावके बणके जोरसे जितमोहमें जो बण था उतना तो उपशम कर दिया था, आ तो उग्र पुरुषार्थसे, आहाहाहा... अंतर आनंदना नाथमां उग्र पुरुषार्थसे जम जाते है. आहाहाहा ! तब उस साधुको क्षीण मोह, मोह नाश हो जाता है, उसको ज्ञानी, क्षीणमोह कहनेमें आता है. आवी वातुं छे.

टीका:- आ निश्चय स्तुतिमें आ छे ने ? “छह” आ निश्चयस्तुतिमें भगवानका आनंदका नाथका आश्रय लेकर जे स्तुति नाम प्रशंसा भगवानकी हुए, अपना स्वरूपकी, आहाहा... “पूर्वोक्त विधानसे आत्तामेंसे मोहका तिरस्कार करके” तिरस्कार किया था जित किया था, आया ने ? अभाव नहीं किया था. आहाहा ! आत्तामेंसे मोहका तिरस्कार करके पूर्वोक्त ज्ञान स्वभावके द्वारा पूर्वे कडा के ज्ञानस्वभाव, भगवान ज्ञानस्वभाव, प्रज्ञा ब्रह्मस्वरूप प्रभु, अे ज्ञान स्वभावके द्वारा अन्य द्रव्यसे अधिक आत्ताका अनुभव करनेसे, अन्य द्रव्यसे भिन्न अपना आत्ताका अनुभव करनेसे जितमोह हुआ. आ तो बत्रीसनी साथमें वात लेकर तेत्रीसमां लेता है आ जितमोह हुआ. उसे जब, उसे जब, अे जवको अपने स्वभावभावकी भावनाका भलीभांति आलंबन करके, देणो. आहाहा... रागका नाश करना है ने ? तो नाश कब हो, जित था उसमें तो उपशम बहोत था, नाश तो उसमें विशेष बण हो तब नाश होता है. समजमें आया ? मुनिको भी राग द्वेष, क्रोध मान आदि स्वभावके अनुसरके पुरुषार्थसे दबा दिया था, उससे आ विशेष पुरुषार्थ है, मोहमेंसे नाश होनेका भगवान आनंद तरङ्गका उग्र पुरुषार्थसे, है ? स्वभावभावकी भावनाका भलीभांति अवलंबन, भलीभांति यथार्थ अवलंबन लेकर, आहाहा ! उपशम भावमें ऐसा अवलंबन नहीं था. आ तो उग्र अवलंबन लिया अंदर, आहाहा... अपने ज्ञान स्वभावकी देणो, (तीर्थकर) भगवानका ज्ञानस्वभाव अे नहीं,

અપના જો ભગવાન (નિજાત્માકા) જ્ઞાનસ્વભાવ જો ત્રિકાળી હૈ, આહાહા ! ભાવનાકા ભલિભાંતિ આલંબન કરનેસે, ઉપશમમેં જો બળ થા ઉસસે આમાં વિશેષ બળ હૈ. આહાહા ! અપના સ્વભાવ સન્મુખકી ઈતની ઉગ્ર દશા હૈ કિ અવલંબન કર, મોહકી સંતતિકા-મોહકી સંતતિ ઉત્પત્તિકા એસા આત્યન્તિક વિનાશ હોકે ફિર ઉસકા ઉદય ન હો. આહાહા ! આંહી તો એવી વાત લીધી છે.

જે રાગાદિ થા મુનિકો એ આકુળતા થી, દુઃખ થા. ઉસકો પહલે ઉપશમ પુરુષાર્થસે સ્વભાવના મંદ પુરુષાર્થસે દાબ દિયા થા, રાગ આદિકો. એ અહીંયા ત્રિકાળી જ્ઞાનસ્વભાવકા ભલિભાંતિ ઉગ્ર આલંબનસે એ ક્રોધ, માન ને રાગ આદિકા પર્યાય ઉદયમેં આતા નહીં, તો ઉસકો નાશ કર દિયા. (શ્રોતા :- અગિયારમામાંથી બારમામાં પહોંચી ગયો ?) આંહી તો ઉપશમ શ્રેણી આઠમાંથી વાત છે. ઉપશમમાંથી ક્ષપક થાય છે એસા નહીં. આ તો સ્તુતિના દૂસરા પ્રકાર વર્ણવતે હૈ. કે જીવને જબ અપના આત્માકા ઉગ્ર અવલંબન લેતે હૈ સમકિત હૈ, જ્ઞાન હૈ, ચારિત્ર હૈ, આનંદ હૈ, પણ હજી થોડા દુઃખ હૈ રાગકા. આહાહા ! આહાહા ! સત્સમગુણસ્થાનમેં રાગ હૈ એ ભાવક તરફકા ભાવ્ય વિકારી ભાવ હૈ, એ સ્વભાવ તરફકી દશા નહીં હૈ. સમજમેં આયા ? આવી વાત. આહાહા ! (શ્રોત:- અપૂર્વ વાત છે)

ભગવાન આનંદ પ્રભુ, આહાહા... અમૃતના આનંદનો સાગર નાથ એને પરસે ભિન્ન કરકે અનુભવ્યા, એસા અનુભવ હોને પર ભી, પર્યાયમેં કર્મકા ઉદય તરફકા ઝુકાવ હૈ, જોડાણ હૈ, ન હોય તો તો વીતરાગ હો જાય. આહાહા ! કેવી ગાથા આવી છે. આહાહા ! તેત્રીસ છે ને ? બે તગડા, નવ, નવ વીતરાગભાવ નવનો આંક અફર હોતે હૈ, નવ એકુ નવ, નવ દુ અઢાર એક ને આઠ નવ. નવ તરી સત્યાવીસ સાતને બે નવ. નવ ચોક છત્રીસ છ ને ત્રણ નવ. નવ પંચા પિસ્તાલીસ પાંચને ચાર નવ. નવ છક ચોપ્પન પાંચને ચાર નવ. નવ સતા ત્રેસઠ છ ને ત્રણ નવ. ઠેઠ નવ નવ. આહાહાહા... ક્ષાયિક ભાવ લેના હૈ ને અહીંયા. આહાહા ! ભગવાન પૂર્ણાનંદકા નાથકા ઉગ્ર અવલંબન લેકર, ભલીભાંતિ અવલંબન લેકર, ભલીભાંતિ બરાબર રીતસે અવલંબન લેકર એમ. આહાહાહા... એ રાગકા જો ભાવ ભાવ્યરૂપ થા ઉસકો નાશ કર દિયા. ઉદયમેં આયા હી નહીં પર્યાયમેં. પર્યાયમેં રાગ આયા હી નહીં. આહાહાહા ! આ સ્થિતિ હૈ એસા પહલે જ્ઞાન તો કરે. સમજમેં આયા ?

જ્ઞાન સ્વભાવકી ભાવનાકા, ભાવના શબ્દે એકાગ્રતા અંદર, ભલીભાંતિ અવલંબન કરનેસે, આહાહાહા... મોહકી સંતતિ દેખો, હજી સાતમેં ભી મોહકી સંતતિ ઉત્પન્ન હોતી હૈ, એમ આવ્યુંને ભાઈ, મોહ સંતતિ, આ મોહ સંતતિ એટલે દર્શનમોહની બાત હૈ નહીં, મોહ શબ્દ કયું લાયા ગયા કે પર તરફકી ઈતની સાવધાની હૈ, કે રાગ આયા રાગ તો એ તો પર તરફકી સાવધાની હૈ એ અપેક્ષાએ મોહ કહા. પર તરફકી એકત્વકા મોહ એ તો તૂટ ગયા હૈ પહલે. સમજમેં આયા ? અરે ભગવાન ! આહાહા ! તેરા પૂરણ સ્વભાવ સમર્થ-શક્તિ એસા ભાન અનુભવ હુઆ, સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાનમેં છર્તે પૂરણ પર્યાય, પર્યાયમેં પ્રગટ ન હુઈ, તબલગ અપની પર્યાયમેં કમજોરીસે ભાવક કે અનુસાર રાગ આદિ હોતા હૈ. આહાહાહા... કર્મસે નહીં, કર્મકા ઈતના અનુસરણ હૈ, અનુસરના એને કાંઈ ખબર નથી કે આ રાગ છે, પણ આ બાજુકા

(स्वभाव तरङ्ग) अनुसरण अपूर्ण है तो आ बाजुका अनुसरण है ऐसा कइनेमें आता है. आहाहा ! मोहकी संतति, मोहनो परिवार, संतति है ने ? राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ आहाहा... ओ बधी मोहनी संतति है. आहा... ध्येय उत्पन्न होना सूनेका कइनेका ओ भी मोहनी संतति है. आहाहा ! ऐसा आत्यन्तिक विनाश हो, (क्या कइ ?) ऐसा आत्यन्तिक विनाश हो, के फिर उसका उदय न हो. आहाहा ! क्षयधारा स्वभावकी उग्रताका पुरुषार्थसे क्षयधारा प्रगट हुँ, ओ रागको क्षय कर देती है. क्षय करुं ऐसा है नहीं, पण स्वभावका उग्र पुरुषार्थ किया तो राग उत्पन्न न हुआ तो ओ रागका क्षय किया, ओम कइनेमें आता है. आहाहा... जो भाव्य होता था, ओ न हुआ स्वभावका उग्र पुरुषार्थसे तो रागका क्षय किया, क्रोधका क्षय किया, मानका क्षय किया, जे जे प्रकारका विभावका विकल्प था उसका क्षय किया. आहाहा !

फिर उसका उदय न हो, इसप्रकार भावकरूप मोह क्षीण हो, आहाहा... भावकरूप मोह क्षीण हो, उदय नाश हो जाता है, आहाहा... तब भावक मोहका क्षय होनेसे, आत्माके विभावकरूप भाव्यभावक भावका अभाव होता है. आहाहा ! तब आत्माके विभावकरूप भाव्यभाव उसका अभाव होता है. आहाहा ! त्रिकाणी आनंदका नाथ प्रभु ओ तरङ्गका गुंकाव तो था, पण अल्प गुंकाव था वो कारणे परका अनुसरणसे जो राग आदि भाव्य था ओ उग्र पुरुषार्थसे अंदर अवलंबनसे रागका नाश कर दिया, क्षय कर दिया, मोहकी संततिका नाश कर दिया. आहाहा ! इवे केवणज्ञान लिये (लीधे) छूटको. आहाहा... ऐसी बात लिया है हों. समजमें आया ? मुनिराज अपनी पण बात करते है उसमें. भविष्यमें हमें अभी तो पंचमआराका संत है तो हमें राग तो है पर्यायमें, वीतरागता भी है, और थोडा राग भी है, पूरण वीतरागता नहीं. ओ रागके कारण पुण्यबंध हो जाता है और स्वर्गमें यले जायेगा. आहाहा... पण वो राग दुःखदायक है, ओ वर्तमानमें तो हम उसका क्षय नहीं कर सकते, पण भविष्यमें (होगा) अत्यारे तो स्वर्गमें गये कुंडकुंदाचार्य संत आहाहाहा... विकल्प रह निर्विकल्प हुआ नहीं वीतराग दशा, पुण्यबंध हो गया स्वर्गका बंध हो गया, स्वर्गमें गये, तो ये राग था ओ दुःख है और दुःखका इण स्वर्ग है. पुण्य है ने ये ? अब तो हम भविष्यमें, आहाहाहा... कदाचित् उपशम धारा भी करे नहीं तो क्षायिकधारा तो करेगा ही. आहाहा ! समजमें आया ? अपनी बात नापकर जरी पुरुषार्थकी (कमीसे) हमारा पंचमआराका जन्म हो गया. मुनिपणा आया आनंदका नाथका, पण कमजोरी है. तो ओ कमजोरीका नाश अभी नहीं कर सके. पण हम स्वर्गमें जाते है त्यांसे मनुष्य होकर हम जब मुनि होगा तब रागका जो भाव्य था ओ स्वभावके बणसे नाश करेगा. आहाहाहा... और वोही भवमें हम केवण लेगा. छेल्वा शरीर होगा, यरम शरीर, आभिरका शरीर छूट जायेगा अशरीरी भगवान अेकला परमात्म दशा रह जायेगी. समजमें आया ?

सादि अनंत अनंत समाधि सुभमां अनंत आनंदकी सादि उत्पन्न तो आदि हुँ, अनादिकी शक्ति थी पण पर्यायमें नहीं था, ओ पर्यायमें अनंत अनंत आनंद पर्यायमें उत्पन्न हुआ. इवे सादि अनंत अनंत समाधि सुभमां, अनंत दर्शन ज्ञान अनंत सहित जो, अपूर्व अवसर ऐसा कब आयेगा, अपूर्व अवसर आवे छे ने श्रीमद्मां. 'अपूर्व अवसर ओवो क्यारे

આવશે' એનું હિંદી છે હિંદી હૈ ભોપાલમેં બનાયા. અપૂર્વ અવસર એસા કબ પ્રભુ આયેગા- એ ત્યાં લેકર આખિરમાં બનાયા હૈ.

“સાદિ અનંત હોં, ત્યાં હે, એ કાંઈ શબ્દ હૈ અંદર- લિયા હૈ અનંત અનંત અનુભવ ગોચર માત્ર રહ્યું તે જ્ઞાન. હિંદી બનાયા હૈ. અપૂર્વ અવસર એ ક્ષય એસા હોકે ફિર ઉદયમેં ન હો એ ભાવ્યભાવક ભાવકા અભાવ, એકત્વ હોનેસે ટંકોત્કીર્ણ એકરૂપ દશા હો ગઈ અંદર. દ્વૈત ઉત્પન્ન થા જો રાગકા જરી અસ્થિરતાકા છૂટકર એકત્વ હો ગયે. નિશ્ચલ પરમાત્માકો પ્રાપ્ત હુઆ, યહ ક્ષીણમોહ જિન કહલાતા હૈ. યહ તીસરી સ્તુતિ હૈ. -વિશેષ આયેગા (શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ)